विवरण – The Chronicle

दि कैथेड्रल चर्च ऑफ दि रिडैम्पशन

नई दिल्ली

* वेदी-स्थल
* विशेष रिपोर्ट
* धर्म मार्ग
* यीशु कार्यस्थल में
* प्रभु के भजन गाओ
* मैं साक्षी हूँ
* चर्च संबधित समाचार
* बाल-समय
* प्रश्न काल
* संपादक का कहना है
* अंत में

वेदी-स्थल

ईश्वरीय निर्देश

जीवन हमे निर्णय लेने के लिए विभिन्न विकल्प व अवसर देता है। हमारा चुनाव व निर्णय ही किसी हद तक उत्तरदायी होता है, जहाँ हम अपने को खड़ा पाते हैं। इसलिये हम पूर्वानुमान लगा एक बेहतर भविष्य का निर्धारण कर सकते है। पवित्र बाईबिल के अनुसार इन प्रयासो का अभ्यास हमारी मदद कर सकता है।

ईश्वरीय इच्छा की खोज करें

जब हमारे फैसले और विकल्प हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और कामकाजी जीवन को प्रभावित करे तो हमे सजग होने की आवश्यकता है। उस परमेश्वर की इच्छा जानना समझदारी है जो उस सबको निर्देशित व संचालित करता है, जो उसने रचा है। उस दैवीय इच्छा का कैसे पता चलता है? यही पर हमारी सोच का संघर्ष होता है। मेरे एक धर्म गुरू ने एक बार टिप्पणी की "यदि आप परमेश्वर की इच्छा जानने मे असमर्थ है तो यही सुरक्षित होगा कि जो चाहते हो ठीक उसके विपरीत करें। मानवीय योजना अक्सर परमेश्वर के उद्धेश्य के विपरीत होती है। परमेश्वर की इच्छा के विपरीत कार्य करने पर हम अपने आपको वैसी ही परिस्थिति मे पायेगें जो योना नबी ने अनुभव की, जब उसने परमेश्वर की निकटता से भाग जाने के लिए सोचा और नीनवें नहीं जाना चाहा (योना 1: 1–3 पढे)। जब हम भले गड़रिये की आवाज़ सुनने को प्रतिबद्ध हो जाते हैं तो वह हमे हरी चराईयों में ले जाता है। परमेश्वर की इच्छा हम तब जान पाते है जब हम उसके वचन का नियमपूर्वक ध्यान करते हैं (भजन 119:105) और प्रार्थना मे अधिक समय लगाते है (मत्ती 18: 1) । परमेश्वर की इच्छा का अनुभव एक आन्नदायी अनुभव होगा।

परमेश्वर के सामर्थ की खोज करें

अगला कदम परमेश्वर की योजना पर आगे बढ़ने का होना चाहिए। यह यात्रा आश्चर्यजनक होगी। अच्छे बुरे दोनों अनुभव, तथा बाधाओं और कठिनाईयों से भरी। बेशक, परमेश्वर की योजना को अपने जीवन मे बदलने मे हमे प्रतिरोध भी सहना होगा। याद करें नूह जब नाव बना रहा होगा तो अपने ही लोगों से उपहास का सामना करना पड़ा होगा। दाऊद को याद करें। जब उसे परमेश्वर ने चुना और राजा शाऊल ने मारना चाहा तो दाऊद को आश्रय के लिये भागना पड़ा (शमूएल 16:13) और वह लोगों मे लोकप्रिय हो गया (शमूएल 18:6,7)। ये सब और परमेश्वर के अन्य लोग इन कठिन परिस्थितियों मे से कैसे उबरे। वो ईश्वर की बुलाहट के प्रति इसलिये विश्वासी रहे क्योकि उन्हे स्वंय परमेश्वर की ओर से ताकत मिली। हम प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में पढते हैं कि कैसे पैन्तिकौस्त के दिन पवित्र आत्मा चेलों पर उतरी। पूर्व मे चर्च इसलिये हर दण्ड को सह सका और विजयी रहा क्योंकि पहले चर्च मे पवित्र आत्मा की सामर्थ तथा शक्ति निवास करती थी। आज हमें परमेश्वर के निर्देशों के पालन हेतु उसी सामर्थ की आवश्यकता है।

एक बार पहचान करके, हम परमेश्वर द्वारा आदेशित मार्ग पर चलना शुरू कर दें तो पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर सदा हमारे संग रहेगें। कमज़ोरी के किसी एक क्षण भी यदि हम लड़खड़ायें, परमेश्वर यह सुनिश्चित करेगे कि हम उसकी महान् योजना से न अलग हों। हम बायें या दायें कही भी मुड़े, परमेश्वर की आवाज सुनने मे सक्षम रहेंगे। "मार्ग यही है, जिस पर तुम्हे चलना है। (यशायाह 30: 21)।

रैव्ह एस डैनिस लाल
प्रैस्बिटर–इन–चार्ज

क्रौनिकल 2 मे, इस भाग में हमने अपने खास प्रोजेक्ट LPCEF के बारे मे जानकारी दी थी। इस बार हम खास लम्हों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेगें– शोक, पुनः जागरण, और नवजीवन इत्यादि– जैसा हमारे सदस्यों द्वारा अनुभव किया गया। लेखक गण इन तकलीफदेह क्षणों से गुजरे है। क्योंकि वो चाहते हैं कि हमारा समुदाय (जिसका वे हिस्सा हैं) रूके, सोचे ,ओर फिर आगे देखे और बढ़े।

खामोश ख्वाहिशें

खामोश ख्वाहिशें की बावाकिफ चौखट पर
उम्मीद, प्यार और मौके नीचे कहीं दफन है
पंछी और फूल इस तन्हा सुबह में
रहते हैं संग संग जहां बहती बयार है
इस एकाकीपन मे अपना भी कोई अजीज
इस कब्रगाह के पत्थरों और घास के बीच ही है
दिलाता है याद वो कुर्बानी मसीह की
तकलीफ है बेपनाह और भारी सलीब है
उसी अज़ीज़ की राह पर हम भी जायेंगे
फिर जलाले आसमानी खुदा को देखेंगे
एक रोज़ जब तन्हा डूबेगा ये सूरज
तब हम मसीह की बादशाहत और नूर देखेंगे

सिल्वेस्टर कॉनरॉड विलियम्स

हम एक शरीर हैं

वार्षिक गार्डन फेट (13 फरवरी) के ठीक एक महीने बाद 13 मार्च को मैने ये लेख लिखा। ये वक्त मैने इस सोच मे गुज़ारा कि मै कैसे हालात से गुज़रा और अपना अनुभव आप सभी से बाँटना चाहता हूँ। उन दिन पहली बार गार्डन फेट के दिन मै बेहोश हो गया। मेरे चेहरे और सीने पर पानी के जब छीटें पडे तो मुझे होश आया। मेरी पत्नी मेरे ऊपर झुकी हुई थी। चेहरा चिंतित था। मुझे पता चला कि मै बेहोश हो गया था। मैंने बहुत से चेहरों को मेरी और पत्नी की सहायता के लिए नजदींक पाया। मेरी पत्नी, मित्र व रिश्तेदार नज़दीक खडे थे। हांलाकि अजनबी उनमे ज़्यादा थे। दो तीन महिलाएं पानी लेने दौड़ी और पूछा कि मै अब कैसा महसूस कर रहा हूँ। मेरी भाभी के एक मित्र ने प्रेम से मेरे जूते व मोजे उतार दिये। डा0 सुवीराज जॉन मुझे तुरन्त अस्पताल ले गये। मित्रो व रिश्तेदारो के अलावा डॉ. जॉन का नाम मुझे याद हैं। जिन्होंने मुझे संभाला, मेरी पत्नी को अपना कार्ड दिया। अस्पताल जाने से पहले वृद्ध व जवानों ने जो प्यार और मदद दी उसने मेरी पत्नी और मुझे पुर्नजीवन दिया। बेशक मुझे नाम याद नहीं लेकिन उन सभी के चेहरे और मददगार हाथ मेरे दिलो–दिमाग मे हमेशा मौजूद रहेंगे। मेरी ख्वाहिश है हम दोबारा एक दूसरे के हाथ थाम सकें। केथेड्रल परिवार की आपसी एकता हमारे हृदय को वादे और भरोसे से अभिभूत कर देती है। "मेरे दुख के दिन तू ही मेरा रक्षक है"। वास्तव मे हम एक शरीर हैं। क्योकि हम एक ही रोटी मे सहभागी हैं।

आर.एन.डे

मसीही रूप मे पुनर्जन्म

महात्मा गांधी के कार्यो पर नवजीवन प्रेस का कॉपीराइट हाल ही में समाप्त हुआ है। कई प्रकाशको ने 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' (My Experiments with Truth) आत्मकथा को आर्कषक संस्करण में प्रकाशित किया हैं। राष्ट्रपिता गांधी जी द्वारा लिखित इस पुस्तक के ऐसे ही एक संस्करण की कुछ समानान्तर जीवन स्थितियों को मैने पढ़ा जो स्वंय ईश्वर मे अटूट आस्था रखते थे। इनसे मुझे बहुमूल्य अर्न्तदृष्टि प्राप्त हुई जिससे मै गम्भीर भौतिक व आत्मिक संकट के

दौरान भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारे प्रभु यीशुं के सत्य को अधिक जान सकूँ। गांधी जी की पुस्तक द्वारा मैने एक अनन्त पाठ सीखा, " इस जीवन मे स्थायित्व की अपेक्षा गलत है, जहाँ पर सिर्फ परमेश्वर ही स्थायी है, निश्चित है।" जो कुछ हमारे आस–पास है, अस्थायी व नश्वर है। किन्तु सर्वशक्तिमान ही एक स्थायित्व के रूप मे छुपा है। उस स्थायित्व की झलक पाने के लिए अपनी जीवन गाड़ी को उसी की ओर दौड़ाओ । जीवन की सुन्दरता व खुशी को जानने के लिए हमें तनाव व दुख से गुज़रना पड़ता है। तभी एहसास होता है, हम दिन प्रतिदिन जिसका पीछा करते हैं, कुछ ऐसा है जो उस सब से महान् व स्थायी है तभी उस अदृश्य शक्तिवान् आत्मा की शक्ति का आगमन होता है। उन अनादि शक्तिवान् आत्मा के साथ प्रार्थना व समागम, अपने और दुनिया के प्रति एक आदर्श बदलाव उत्पन्न कर देना। अप्रत्याशित रूपांतरण होगा। कुछ ऐसा घटित होता है जो तुरन्त ही एक स्वाभाविक विश्वास लौटा देता है। धर्मग्रन्थ एक नया अर्थ ले लेते हैं। एक नये जीवन का आरम्भ होता है। सही मायनो मे पुर्नजन्म हो जाता है। एक नयी प्रार्थना उपजती है, " ईश्वर मुझे शुद्ध कर, मेरे शरीर को तेरा प्रार्थना स्थल बनाः आ, मेरे हृदय मे घर बना । इस नश्वर प्राणी को अपना सच्चा सेवक बना, एक सत्य मसीही बना। क्योकि मै नव जात हूँ। अब मै नया व पुनः जीवित हूँ। मै सही मायनो में एक सच्चा मसीही बनना चाहता हूँ।

बी.वी.सेल्वाराज

धर्म मार्ग

लिटिल गिडिंग

काफी अर्सा पहले – पादरी कैनेथ शार्प ने, प्रार्थना स्कूल राजपुर, देहरादून मे युवाओ के लिये धर्म– सम्मेलन का सचांलन किया। और लोगो की तरह मुझे भी कुछ सत्र अति रोचक लगे जो घ्यान व पठन पर आधारित थे। हॉलाकि वो संयोजित प्रार्थना और नीरस दिनचर्या से प्रभावित हुए। बहरहाल मैने अपनी प्रार्थना मित्र जैनी हिल्स (जो नॉटिंगम से है) के साथ आन्नद उठाया। एक दोपहर जब मै हर वक्त की प्रार्थना से उत्पन्न खीज की शिकायत कर रही थी, तब उसने मुझे एक कविता का वह अंश दिखाया जो मुझे बाद मे पता चला कि वह टी.एस.ईलियट की कविता 'Little Gidding' से था। उस काव्य अंश के अनुसार आप यहां स्वयं को सत्यापित या निर्देशित करने के लिये नही है, या उत्सुकता अथवा सूचना वहन करने हेतु नहीं हैं। मुझे कविता अच्छी लगी और अब भी अच्छी लगती है। किन्तु मैने यही सोचा कि प्रार्थना के संबध मे जैनी कुछ ज्यादा उत्साहित है।

कुछ वर्षों बाद जब मै कैम्ब्रिज, इंग्लैंड मे पढ़ रही थी। मुझे 'Little Gidding' (लिटिल गिडिंग) जाने का मौका मिला। यह दक्षिणी पूर्व इंग्लैड का वह स्थल है जहां सत्रहवीं शताब्दी से तब से लगातार प्रार्थना होती है जब से एंग्लिकन समुदाय ने इसे अपना निवास बनाया। यह धार्मिक आयोजन दिलचस्प रहा क्योकि हमें आज़ादी से, टूटी– फूटी, कीचड़ भरी, देहाती गलियो मे घूमने दिया गया, जैसा उस कविता मे उल्लेख था। नीचे, सपाट, आकारविहीन, पूर्वी इंग्लैंड के दूर तक फैले ग्रामीण क्षेत्र । हमने प्रसन्नता से ब्रैड, चीज व फल का देहाती भोजन किया जो ग्रामीण ब्रिटिश की अवधारणा के अनुसार वास्तव मे शायद ही किसानो को उपलब्ध हो। जब हम प्रार्थना कर रहे थे, तो अचानक मेरे हाथ जंगल से टकाराये और मुझे वह काव्याशं याद आया, "तुम यहां घुटने के बल प्रार्थना करने के लिये हो, जहां प्रार्थना अकाट्य है, सर्वमान्य है।" मुझे एहसास हुआ, जैनी वर्षों पहले क्या कहना चाहती थी कि प्रार्थना की महत्ता के समक्ष व्यर्थ वार्तालाप , बोरियत और हतोत्साह कोई मायने नही रखता है। मै अब तक यह नही समझती कि मैं इन सब से अब भी पूर्ण सहमत हूँ किन्तु अब जब मै यह कविता (Little Gidding) (लिटिल गिडिंग) अपने स्नातकोत्तर छात्रो को पढाती हूँ , मै उस लम्बे व घुमावदार राह के बारे मे सोचती हूँ जिससे मै गुज़री और आश्चर्य करती हूँ कि आगे भविष्य मे क्या होना है।

क्रिस्टेल आर, देवदासन

यीशु कार्यस्थल में

सीमा जेसन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के मैनेजिंग डायरेक्टर के पद पर पिछले चौदह वर्षो से सहायक है तथा 25 वर्षो से कार्यरत है।

हमारे प्रभु यीशु के लिये कामकाजी संसार अनजान नही है। उनके जीवन का अधिकाँश समय अपने परिवार के छोटे से व्यवसाय मे व्यतीत हुआ। जब उन्होंने पिता के बढ़ई के काम को सीख लिया होगा, तब उसके बाद उन्हें ग्राहकों से मिलना होता होगा, निश्चित समय पर कार्य पूरा करना होता होगा, मूल्य तय करना, सामान देने वालो को पैसे देना और शायद कारीगर रखना और उनको संचालन भी करना होता होगा। यीशु की 132 जन उपस्थिति मे से 122 बाजारों मे थी। उनके दिये 52 दृश्टांतों मे से 45 कार्यस्थल से संबधित थे। यीशु के 54ः सेवा उपदेश रोजमर्रा के जीवन मे दूसरो द्धारा उठे मुद्दों से संबधित हैं। प्रेरितो के काम मे उल्लेखित 40 अद्भुत कार्यो मे से 39 उगम जनस्थलों पर ही हुए थें। पवित्र बाईबिल मे विभिन्न रूपो मे 800 बार कार्य का उल्लेख है। प्रार्थना संगीत प्रशंसा और गायन के लिये संयुक्त रूप से प्रयुक्त शब्दों से कही अधिक । खुदा ने कार्य को रचा और वह स्वयं एक श्रामिक थें। ”मेरा पिता अब तक काम करता हैं और मै भी काम करता हूँ (यहून्ना 15:17)।” दुंभाग्यवश हम चर्च के कई लोग अक्सर इस तरीके से नही सोचते। हम काम को एक प्रकार से ऊबाउ और अपने और परमेश्वर के बीच एक बाधा की तरह समझते है। कई बार हम अपनी नौकरी, काम छोड़ पूरे वक्त प्रभु की सेवा मे लग जाने का स्वप्न भी देखते हैं। हममे से अधिकतर ऐसा नही कर पाते हैं तो अपने काम का नुकसान होने देते हैं और रविवार का उपयोग परमेश्वर संग अपने अनुभव को पूरक रूप मे प्राप्त करने हेतु करते हैं। चेले झील पर मौजूद थे क्योंकि यीशु ने उनसे कहा कि वो उनसे गलील मे मिलेगा। वह कार्य हैं, जहां यीशु अपने मित्रों से मिलता हैं ताकि वो सीख सकें कि यीशु के पुनरूत्थान के बाद उसके शिष्य बन, उसका किस प्रकार अनुसरण करना हैं, जब वह उनके संग शरीर मे नही रहेगा।

चर्च कार्य व चर्च के लिये कार्य मे अंतर हैं। चर्च कार्य एक संगठित चर्च संस्थान के विषय होता हैं। चर्च के लिये कार्य दो रविवारों के मध्य दिनों मे होता है जब चर्च शहर मे विभिन्न रूप मे विद्यमान होता है– घर, स्कूल और दफ्तर मे। अक्सर हमारा दिन काम मे गुज़रता हैं। इसका अर्थ कार्यस्थल एक अवसर स्थल है व ऊर्जा पूर्ण है। हमारा कार्यस्थल हमारे लिये एक मिशन है। यीशु के लिये गवाही है। ये जगह है जहां हम उसका प्रचार कर सकते हैं। मेरा विश्वास है कि चर्च के लोग जहां भी वो काम करते हैं, परमेश्वर के राज्य के दूत और पवित्र संदेश के प्रतिबिम्ब के रूप मे जीवन जीयें।

फिर भी मै अधिकतर देखती हूँ , सोमवार से शुक्रवार तक अपनी नौकरी के ही परिचित दायरे, जहां दूसरों के लिये क्रूस और सेवा कार्य संचालित नही कर पाती। मै कई बार भूल जाती हूँ कि यीशु मुझे मेरे संग नाव मे सवार मसीही और गैर मसीही दोनो संग काम करने और उनकी मदद करने को कहते हैं। औरों की तरह मै भी काम का अधिकतर वक्त नाव के गलत हिस्से मे काम करके गुज़ारती हूँ। मै तब भूल जाती हूँ , जब भी चेले यीशु से मिलते थे, सबसे पहले उनसे अपने काम के बारे पूछते थें। हमे याद रखना चाहियें कि कार्यस्थल वो स्थान है जहां अधिकतर कलीसिया के लोग अधिकांश समय व्यतीत करते है। दुनिया के बीच जो चर्च से सबंद्ध नही है। सोमवार का चर्च ही सही अर्थो मे रविवारीय चर्च का साक्षी है।

सीमा जेसन

श्रीमती आशा वाशिंगटन जो शिक्षण कार्य मे गत बीस वर्षों से है। पिछले दसः साल से हैप्पी सीनियर स्कूल कीर्तिनगर मे अध्यापिका हैं। वह कक्षा 9 व 10 को समाजिक ज्ञान (भूगोल, इतिहास व राजनीति विज्ञान) पढ़ाती है तथा कक्षा 11 व 12 को अंग्रेजी, हिन्दी व मनोविज्ञान मे प्राइवेट ट्यूशन्स देती है। विवाह के बाद जब वह मसीही समुदाय मे सम्मिलित हुई तब से उन्होने सैटं थॉमस चर्च , मंदिर मार्ग मे बीस वर्ष तक आराधना की और पिछले वर्ष कैथेड्रल की सदस्य बनीं । बिशप करम मसीह के समय दिल्ली डॉयसिस सहायक समिति मे उन्होने कार्य किया और अपने पति संग वह बाइबिल सोसायटी की आजीवन संरक्षक रही है।

आज की पीढ़ी के लिये अपनी ज़रूरतें पूरी करने हेतु पैसे के लिये कार्य करना जरूरी हो गया है। हम विभिन्न जगह विभिन्न नौकरियों मे विभिन्न दायरो मे काम करते है। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि वक्त के साथ बहुत कुछ बदल गया है। मूल्य और व्यवहार गया है। क्योकि हमारा मुख्य ध्येय पैसा कमाना रह गया है। कई बार लक्ष्य पाने के लिये लोग गलत तरीके चुन लेते हैं। बेईमानी, पीठ पीछे आलोचना, चापलूसी और झूठ बोलना इन मे शामिल है। लोग दूसरों को आगे बढ़ने से रोकते है। कार्यस्थल मे राजनीति आम बात हो गयी है। इन सब बातो से ईमानदार व समर्पित कर्मचारी व्यथित महसूस करते है। तनाव व दबाव उन्हें टूटने, यहां तक कि, आत्महत्या की ओर तक धकेल देता है।

क्या इन समस्या का हल है ?   हाँ हल है। जिसे कार्यस्थल मे यीशु का होना कहते है। सबसे बडी आज्ञा जो यीशु ने दी है, “

अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो "और हमे इसी उपाय को विशेषतः कार्यस्थल पर अपनाना चाहिये। अपने सह कर्मियो से प्यार व अच्छा व्यवहार करना चाहिये क्योकि हम भी उनसे अपने प्रति अच्छे व्यवहार की अपेक्षा रखते है। हम प्रयत्न करें ईमानदार व विनम्र होने का, परिश्रम करे और जो कार्य न किया हो, उसका श्रेय न लें। हम सब प्रार्थना करें कि यीशु हमे अपनी ताकत दे कि हम अपने कार्यस्थल पर उसकी शिक्षाओ पर ही चलें।

आशा वाशिंगटन

प्रभु के भजन गाओ

अंग्रेज़ी कलीसिया की प्यानो वादिका श्रीमति शीला ज.सैमुएंल इस लेंख मे भी मसीही गीतो के परस्पर संबध और मसीही जीवन परिवर्तन की उनकी शक्ति के बारे मे आगे बता रही है। उनके विषय भी जिन्होने ये भजन लिखे हैं।

अमेज़िगं ग्रेस और "जस्ट एज़ आय एम " के बाद वह " नियरर माय गॉड टू दी" की ओर ध्यानाकर्षित कर रही हैं। इनमें कैनेथ ऑसबैक की पुस्तक 101 हिम स्टोरिज से अशं लिए गयेंहै।

मसीही गीतों की कहानियां

"प्रभु भजन गाओ " की इस श्रृंखला मे हमने वह भजन चुने है जो प्रचलित हैं व अक्सर चर्च मे गाये जाते हैं। ऐसा ही एक अति सुंन्दर भजन जो एक महिला द्धारा लिखा गया है, वह है, तुझे पास ए खुदा; (Nearer my God to thee) है। लेकिन साराह फ्लावर एडम्स का जन्म 22 फरवरी 1805 को हॉरलो, इंग्लैंड मे हुआ था। उन्होने एक पूर्ण व फलित जीवन जीया हांलाकि 43 वर्ष की कम आयु मे उनका देहांन्त हो गया। वो थियेटर आदि मे काफी सक्रिय थीं और खराब स्वास्थ्य के बावजूद अपनी अनेक साहित्यिक उपब्धियो के लिये काफी ख्यात थी।

इस प्रभु भजन से कई घटनाएं जुड़ी हैं। सन् 1871 मे, तीन महान धर्म शिक्षक प्रोफेसर हिचकॉक, स्मिथ व पार्क फिलिस्तीन की यात्रा कर रहे थे, जब उन्होने 50 सीरियल छात्रो के दल को अरेबिक भाषा में यह गीत गाते सुना। प्रोफेसर हिचकॉक ने बाद मे कहा कि सीनियर छात्रो द्धारा यह मसीही गीत गायन उनकी आँखों मे आंसू ले आया और अन्य किसी भी मसीही गीत से अधिक इस गीत ने उन्हे प्रभावित किया। एक और विवरण टाइटैनिक नामक जहाज के बारे मे है। जब वह 1912 मे एंटलाटिक महासागर के बर्फानी पानी मे डूब गया तथा उनमे सवार 1500 यात्रियों की मृत्यु हो गयी, तब अन्तिम क्षणों मे जहाज का बैंड Nearer my God to thee (तुझ पास ए खुदा) गीत की धुन बजा रहा था। परमेश्वर ने विश्व भर मे अपने लोगो की बीच शांति व आशीष देने हेतु इस भजन का उपयोग किया है। इस गीत को महसूस कर के गाओ आप निश्चित ही खुद को प्रभु की नजदीकी मे पाओगें।

शीला जे.सैमुएल

मै साक्षी हूँ

जहां क्रौनिकल 2 मे कलीसिया के कई सदस्यों द्धारा चर्च जीवन के विभिन्न पहलुओं के अनुभवो की गवाही का परिचय हुआ वही क्रौनिकल 3 मे एक व्यक्ति विशेष द्धारा अनुभव किये गये एक संकट की गवाही है। ये उसके मृत्यु– छाया की घाटी मे चलते हुए अनुभव की साक्षी है। ये साक्षी हमे उसके पीड़ा युक्त जीवन से एक नये जीवन की ओर ले जाती हैं और आशा इससे कही अधिक आगे।

"चाहे मै घोर अंधकार से भरी हुई तराई मे होकर चलूं , तो भी हानि से न डरूंगा क्योकि तू मेरे साथ रहता है। तेरे सोटे और तेरी लाठी से मुझे शांति मिलती है। "(भजन– 23. 4)"

इन पंक्तियों को मैने कितनी सुंदरता से समझा जब मै असहाय थी जब मै ढाई महीने से ज़्यादा सैटं स्टीफेन्स अस्पताल मे गंभीर बीमारी की अवस्था मे भर्ती थी। जब मैने विचारो को स्व–केन्द्रित किया तो विश्वास की शक्ति व साहस का अनुभव किया। आज मै परमेश्वर के प्रेम, दया व उपचार की साक्षी हूँ। मैने ईश्वर की असीम महिमा व शक्ति की अनुभूति की हैं, साथ ही सर्वव्यापी रचियता तथा मुक्तिदाता परेमश्वर के प्रेम और देखभाल की भी अनुभूति की हैं। मैंने इस पंक्ति की सच्चाई मे अपने को बढ़ता पाया है। "यहोवा मेरी चट्टटान मेरा गढ़, और मेरा छुडाने वाला है (भजन 18. 1)। विश्वास अद्भुत कार्य करता है। ये अंधकारमयी ताकतो से लड़ता है। और जब हम लम्बे वक्त तक बीमारी मे हो तो उदासी की चादर हटाकर हमे संयम रखने मे मदद करता है। विश्वास महिमापूर्ण सूर्य की तरह है। जो नीरस दिनो को

प्रकाशमान करके प्रोत्साहन तथा साहस देता है। हमे परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए क्योकि वह हमारा शरणंस्थल व शक्ति है। जब हमे दुख सताता है, वह अपनी कोमल दया से हमारे भय को शांत करता है, जो विश्वास व ताकत मे प्रतिरूपित होता है।

मै हार्दिक रूप से, हमारे प्रिय बिशप सुनील सिंह, बिशप करम मसीह, पादरी इयान वैदरॉल, पादरी डैनिस लाल, पादरी डा. क्रिस्टोफर राज, अन्य धर्मसेवक, रिश्तेदार व मित्र सभी की कृतज्ञ हूँ। मै सैटं थॉमस स्कूल परिवार और हमारे कैथेड्रल परिवार को भी नही भूल सकती जिनके विजिट, प्रार्थनाओं व आशीषों ने मुझे सम्भाले रखा । मै आभारी हूँ, अपने परिवार की, विशेष धन्यवाद सैंट स्टीफेन्स अस्पताल के डाइरेक्टर डॉ. सुधीर जोसेफ जिन्होने डॉ. पी. सी. खंडूरी के साथ मेरी सर्जरी की (डॉ.खंडूरी को भारत मे प्रथम लीवर प्रत्यारोपण का श्रेय जाता है)। साथ ही उनकी सारी, कुशल डॉक्टर्स व नर्सेस टीम का धन्यवाद। परमेश्वर के आशीष ने इन सभी को मुझे स्वास्थ्य व शक्ति को पाने हेतु भेजा।

जब हम अपने हृदय और आत्मा से प्रार्थना करते हैं तो प्रभु को अपने निकट पाते है। वह एक दुखी दिल को खुश, कमजोर दिल को मज़बूत और बीमार शरीर को स्वस्थ करता है। प्रार्थना शक्ति हर बंधन तोड देती है। हम इसकी शक्ति व मजबूती पर निरतंर विश्वास रखना चाहिए। मेरे प्रभू यीशु ने मुझे आशीशित किया जब मेरा विश्वास डगमगा गया था। मुझे मार्गदर्शन दिया, दिलासा दिया और मुझे आगे बढाया।

"चाहे जैसे भी हो, परमेश्वर प्रार्थना सुनता है
उसके वचन मे लिखा है। वह प्रार्थना सुनता है
देर से या जल्दी उसे उत्तर मिलता है
जो प्रार्थना करता व प्रतीक्षा करता है
वह विश्वासी, अतुलनीय और आशिषित है
यह उसका महानतम् समृद्ध कोश है

पुनः हे मेरे प्रभु मेरे बल, मै आपसे प्रेम करती हूँ। प्रभु मेरी चट्टान, मेरा गढ़ है। उद्धारकर्ता है। मेरा ईश्वर मेरी चट्टान है। मै उसके शरणागत हूँ, वह मेरी ढाल मेरी मुक्ति का सींग और मेरा ऊँचा गढ़ है। मै यहोवा को जो स्तुति के ऊँचा गढ है। मै यहोवा को जो स्तुति के योग्य है, पुकारूँगा। (भजन 18. 1–3)

सिंथिया मनोहरन

चर्च संबधित समाचार

क्रौनिकल 2 के भाग मे कलीसिया की कई आवाज़ों की इच्छाओ का जिक्र हुआ है। क्रौनिकल 3 मे इन्हीं बातों का विस्तार है। हम पूर्व की उस आवाज से आरम्भ कर रहे है जो चर्च के शुरूआती दिनो का स्मरण कराती है। तत्पश्चात हम अगले अंश मे चर्च मे व्याप्त वर्तमान समय का चिंतन सांझा कर रहे हैं। अतं मे दो आवाजें एक ही टिप्पणी पर लय बद्ध प्रतीत होती है। जो हमे भावी दुनिया मे ले जाती है।

हाल ही मे ईस्टर संडे के दिन ' क्रौनिकल' को प्रोफेसर आइरिस देवदासन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जब वह दिल्ली आयी थीं। वे श्री सैमसन डैनियल की पुत्री हैं। जिन्होने हमारे चर्च के तमिल प्रार्थना सभा को संभव बनाने मे बहुत योगदान दिया। प्रोफेसर देवदासन ने, एम.ए. अंग्रेजी (दिल्ली विश्वविद्यालय) लिंग्विस्टिक (ब्रिमिघम, यू.के) तथा पी.एच.डी (मैसूर विश्वविद्यालय) आदि डिग्रियां प्राप्त की हुई है। उन्होने बैंगलोर (दक्षिण भारत) के यूनाइटेड थियोलॅजिकल कॉलेज मे 26 वर्श तक E.S.P थियोलॉजी पढ़ाया है। इस क्षेत्र मे इन्होने उल्लेखनीय कार्य किया है तथा लेखन व प्रकाशन किया है जो इन्होने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों मे भी प्रस्तुत किया है। वह उस समय को स्मरण कर रही हैं जब कैथेड्रल उनके लिए स्कूल और चर्च दोनो था।

सन् 1945 मे जब द्वितीय विश्वयुद्ध का समापन हुआ, रैव .जे. डी टाईटलर ने जो कि आर्मी अफसर व शिक्षाविद् भी थे, रैव. क्लेंटन के सेवाकाल मे कैथेड्रल मे स्कूल आरम्भ किया। ये 17 यूरोपियन बच्चों के साथ आरम्भ हुआ लेकिन जल्दी ही मेरी बड़ी बहन डौरिस और मै इनमे शामिल हो गये। उस वक्त मै L.K.G मे थी। हमे रैव. टाइटलर बहुत पंसद थे। उनके लाल रंग के कारण हमने उनका नाम लाल मुर्गी रख दिया बाल कथा ''दि लिटिल रेड हैन'' के उस चरित्र पर जो अति कुशल व मेहनती चरित्र था। रैव. टाइटलर ने चर्च कम्पाउड मे आर्मी टैन्टो का उपयोग कक्षाओं के तौर पर किया। साइप्रस की झाड़ियां बाथरूम के लिये, पर्दे का काम करती थीं। प्रातः कालीन सभा चर्च मे होती थी। और हम छोटे बच्चों को आगे की दो पक्तियों मे बैठना पड़ता था। हीरा लाल तब युवा थे । सन 1947 मे जब देश आजाद हुआ, रैव. टाइटलर ने स्कूल का नया नाम चुनने के लिये छात्रो मे प्रतियोगिता आयोजित की । आज ये सामान्य बात हो लेकिन उस वक्त जब सभी पब्लिक स्कूलो के नाम एंग्लिकन थे, नवीन भारत हाई स्कूल एक काफी परिवर्तनवादी नाम था। धीरे धीरे छात्रों की संख्या बढ़ती गयी और स्कूल चर्च कम्पाउड से बाहर स्थान्तरित करना पडा जहा अब नॉर्थ एवेन्यू मे सांसदो का आवास स्थल है। दोबारा मथुरा रोड पर ज़मीन लेने के लिये फंड इक्ट्ठा किया गया। उस स्थल पर जो स्कूल विकसित किया गया, वो बाद मे दिल्ली पब्लिक स्कूल बन गया । इसके बाद दिल्ली भूमि व वित्त विभाग ने ग्रेटर कैलाश विकसित किया जहां समरफील्ड स्कूल आरम्भ किया गया। उस वक्त जमरूदपुर मे डकैत घूमा करते थे। मै रैव. टाइटलर के साथ समरफील्ड स्कूल चली गयी। जहां मैने अपना सीनियर कैम्ब्रिज सन् 1956 मे पूरा किया। मै कैथेड्रल से जुड़ी अपनी इन यादो को हिस्सा आप सब से सांझा कर बहुत खुश हूँ । कैथेड्रल मे हमारा आत्मिक व शैक्षिक, दोनो रूप से विकास हुआ।

आइरिस देवदासन

हमारा गार्डन फेट

जब मुझे गार्डन फेट 2010 मे हिन्दी कलीसिया की ओर से सह संचालक का कार्य भार सौपा गया तो निश्चित तौर पर मै काफी प्रसन्न थी। मैने स्वयं को सम्मानित अनुभव किया क्योकि मानव सेवा के लिये चयन परमेश्वर का ओर से होता है। ये कठिन काम था और कांटो के ताज पहनना सरीखा था मै अचम्भित थी कि हमारा कैथेड्रल कैसे वर्षो से लगातार इस प्रोजेक्ट का सफल संचालन कर रहा है– जो कोढ़ से पीड़ित गरीबों के बच्चो की मदद हेतु है– जो दरिद्र है, असहाय हैं। किन्तु क्या वास्तव मे हम इस संदेश को समझते हैं और कार्यन्वित करते है? एक कॉर्डिनेटर के तौर पर मुझे खट्टा मीठा अनुभव हुआ। जो लोग दयालु, उदार ह्रदयी दिखते हैं और निश्चित तौर पर समृद्ध भी हैं, ज़रूरत के वक्त खोखले और पाखण्डी साबित होते हैं। जब हम चर्च द्वारा संचालित एक समाजिक कार्य मे मदद हेतु इतने उदासीन हैं तो क्योंकर नाम और शोहरत के अभिलाषी बन जाते है। क्योकि इन सब बातो से यही ज़ाहिर होता है कि मानो हम प्रभु संग एक नाव पे सवार तो हैं लेकिन जब तक पानी शांत हैं, यीशु को सोने देते हैं। और जब तूफान आता है तो औरों की मदद को आगे बढते हैं, और साथ ही प्रभु से याचना करते है कि वो हमारे जीवन को सम्भाले, हमे बचाये। शायद ये रंग बदलने का व्यवहार हमे त्यागना होगा और ईमानदारी से मसीही जीवन जीना होगा।

अनीता मौरिस

वेदी स्थल से एक आवाज

क्या हम वेदी के पीछे, ईश्वर के सत्य को जानते हैं और समझते हैं कि ये क्या कहता है। मेरा काफी समय इससे वार्तालाप करते बीता है। यहां मै अपने पाठकों से कहना चाहूँगा कि मेरी व्यक्तिगत कल्पना के बजाय अपनी अर्न्तदृष्टि व चेतना मे प्रवेश करें। तभी आपको दैव्य अनुभूति होगी।

मै अपनी गवाही सांझा कर गर्वित अनुभव करता हूँ। जब मै पिछले जीवन पर नजर डालता हूँ तो महसूस करता हूँ कि वेदी के साथ अपने सबंधों के संदर्भ मैने कितना बदलाव पाया है। दस साल पहले जब मैने पहली बार कैथेड्रल मे प्रवेश किया मै उसकी शक्ति और वैभव से चकित था। जैसे जैसे मै बढ़ता गया, हर तूफान को झेलने योग्य ताकत मैने प्राप्त की। यीशु के उस कथन को गौर करे, " तुम मुझे कहा ढूढ़ते हो? क्या नहीं जानते मैं अपने पिता के घर मे हूँ। " (लूका 2:49)। यीशु ही वेदी की आवाज है। जिससे मेरी मुलाकत कैथेड्रल में हुई। जब कभी मै असहाय और पीड़ित अनुभव करता हूँ, मै ऑल्टर पर उससे बात करने और उसका उत्तर सुनने आ जाता हूँ।

वह घटना, जिसने मुझे परमेश्वर की ओर मोड़ दिया, मेरी बहन लक्ष्मी का दुघर्टना ग्रसित होना, जटिल ब्रेन सर्जरी होना और चमतकारिक रूप से स्वस्थ हो जाना है। इस दुःस्वपन के दौरान परमेश्वर की आवाज ने मुझे सम्भाले रखा। " निराश मत हो , मै तुम्हारे साथ हूँ। मेरी बहन के तीव्र स्वास्थ्य लाभ को देख उसके न्यूरो– सर्जन व मैडिकल टीम भी हैरत मे थी। वो पूछते थे। "आप किससे प्रार्थना करते हो "

"हमारे प्रभु यीशु से", हमारा उत्तर होता। ये सब कुछ मुझे यीशु से अधिक प्रेम व आदर की ओर ले गया। मै परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ ,उसने मुझे सेवा के लिये चुना और उस महान खुदा ने वेदी– स्थल से अपनी आवाज के द्वारा मेरे छोटे से ह्रदय को शांति प्रदान की। मै उस व्यक्ति के लिये एक कविता के साथ अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ जिसने मुझे मेरे चयन मे मदद की–

मेरा उपदेशक ही मेरा गुरू है
मेरा उपदेशक ही मेरा अध्यापक और मार्गदर्शक हैं
उसके शब्द उपदेश मेरे लिये आदेश जैसे हैं
मै जब भी आऊं, मै जहां भी जाऊं,
वो मुझसे एक संदेश जितना दूर हैं
जो कहता करता हूँ ,जानता हूँ मै खास नही
लेकिन मुझे सत्य सिखाने और दर्शाने वह सदा संग हैं

सचिन पॉल

सही कैरियर

कई युवाओं से हमारे चर्च में तथा अन्य जगह– जब यह प्रश्न किया जाये, बड़े होकर तुम क्या करना चाहते हो, किशोर अक्सर जवाब देते हैं, "पता नही। " क्योकि इस ग्रीष्म में मैनें एम.ए. राजनीति विज्ञान दिल्ली विश्वविद्यालय की परीक्षा दी हैं और मै अपना कैरियर चुनने की कगार पर हूँ इसलिये मै कुछ सुझाव देना चाहती हूँ किशोर अवस्था मे आपसे कोई ये जानने की अपेक्षा नही कर सकता कि बाकि जीवन आप क्या करेंगे। सो आप खुश रहें । कोई नियम नही, कैरियर संबधी अपने विचार आप कई बार बदल सकते है। अपनी रूचि, योग्यता और कमियों की सूची बनायें । बहुप्रचलित कैरियर को ही चुनने की न सोचे । नया रास्ता भी अच्छे कैरियर का मार्ग बन सकता है। जो करना चाहते हो करो पैसा आपके पीछे खुद आयेगा। जब आप ये जान ले कि आपको क्या पंसद है, उन कैरियर अवसरों को तलाशे जिनसे सबंधित आप मे योग्यता है। ये सब आप वर्गीकृत विज्ञापनों मे व कैरियर वैब साइट्स जैसे monster.com या career finder इत्यादि मे देख सकते है। यदि आप समय रहते निर्णय ले लें,

आप सही कोर्स चुन सही अंक पा सकते हैं। और सही शिक्षा संस्थानो मे अपना विवरण, एडमिशन और फंडिग के लिए जमा कर सकते है। फंडिग हेतु आवेदन से पहले अपेक्षित योग्यता जांच ले। कई बार वित्तीय सहायता इसलिये उपयोग नही की जा पाती क्योकि छात्रो को इस विषय में जानकारी नही होती । अपनी रूचि की नौकरी के लिए कैरियर मेले तथा ओपन–डे सेशन्स मे अवश्य जायें। उस क्षेत्र के लोगो से बात करे ताकि उस कार्य के बारे मे जान पायें। इस तरह अपने मनपंसद कैरियर के विषय आप पूर्ण जान सके । याद रखे गलत कैरियर चुनाव आपके व्यक्तिव के मुताबिक नही होगा न चुनौती पूर्ण। बेस्ट आफ लक।

आर. ब्रिटिका

बाल-समय

अपने वादे के मुताबिक क्रौनिकल 3 मे संडे स्कूल की तीसरी व अतिम किस्त प्रस्तुत है। जिसमे हिन्दी कलीसिया के संडे स्कूल की गतिविधियां संग्रहित है। इसमे अग्रेंजी व तमिल संडे स्कूल रिपोर्ट की ही तरह उपस्थिति व शिष्यता पर प्रकाश डाला गया है। यहां एक रोचक प्रश्न भी उठता है। वह जिसके ह्रदय मे अपने संडे स्कूल की स्मृति अभी ताजा है, जब संडे स्कूल के बच्चो की कक्षा लेना आरम्भ करती है।

संडे स्कूल (हिन्दी सैक्शन)

जब हिन्दी कलीसिया के संडे स्कूल टीचर क्रिस्टीन विलियम्स को अपनी नवजात सुंदर सी बेटी के देखभाल के कारण कुछ समय के लिए विराम लेना पड़ा, उनकी अनुपस्थिति मे पढ़ाने के लिये मैने सहर्श अपने को प्रस्तुत कर दिया । आशा है उनकी वापसी पर भी मै उनकी सहायता कर पाऊंगी। एक टीचर के तौर पर पहले संडे मुझे वह समय याद आ गया जब मै स्वंय कैथेड्रल के संडे स्कूल की छात्रा थी। मुझें यह सेवा दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण लगी। बच्चे फरिश्तों के समान मासूम होते है। उनके संग समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। बाल्यकाल खेलने और मौज करने का दौर होता है। अध्ययन अक्सर बोरियत से भरा सजा के जेसे लगता है। इसलिये मै जब उन्हे पवित्र बाइबिल और प्रभु यीशु के बारे म बताती हूँ तो अक्सर बच्चों को नये नियम मे लिखित दृष्टातो का कहानी के तौर पर वर्णन कर संदेश समझाने की कोशिश करती हूँ । इस प्रकार वे प्रभु यीशु के विषय अधिकतम जानकारी स्मरण और ग्रहण कर लेते है। और स्वतः बाइबिल के पद भी कंठस्थ कर लेते हैं। इस बार ईस्टर के पर्व पर, जब सभा के दौरान इन बच्चों ने दो मसीही गीत गाये, तब उनके चेहरे खुशी से जगमगा रहे थें।

बच्चो मे बहुत उत्साह होता है। वे आज्ञाकारी व बुद्धिमान होते है। वो चीजो को खेल पद्धति मे सीखना चाहते है, और जब उनकी मर्जी हो। धमकाना या दबाव डालना उनके लिये नुकसानदेह हैं। मेरी हिन्दी कलीसिया से विनती हैं कि वे प्रत्येक रविवार अपने बच्चे संडे स्कूल भेजे ताकि वे बाल अवस्था मे ही प्रभु यीशु व पवित्र वचन के विषय अधिक से अधिक जान सके, सीख सके। तभी उनके जीवन की नीव और भावी जीवन की भूमि मे ,जो प्रभु यीशु ने उनके लिये नियोजित की हैं, ताल मेल बैठ सकेगा । हमारे बच्चे अन्य बच्चो से अलग पहचान रख पायेगे, जहां जीवन मूल्य अधिक मायने रखते हैं। परमेश्वर की महिमा हो, आमीन ।

मिहिका मौरिस

प्रश्न काल

1. वह कौनसा बालक था जिसका पिता परमेश्वर की आज्ञानुसार उसकी बलि देने हेतु तैयार हो गया था?
2. युद्ध मे अपनी विजय प्रतिज्ञा के अनुसार किसने अपनी बेटी की कुर्बानी दे दी थी?
3. शाऊल के बेटे का क्या नाम था, जो दाऊद का सबसे अच्छा मित्र था?
4. कौन से दृष्टान्त का केन्द्र एक बच्चा और उसका भोजन है। यह दृष्टान्त नये नियम की चार पुस्तको मे वर्णित है।
5. एक सिरोफिनेनियन स्त्री किस के लिए प्रभु यीशु से सहायता मांगती है

संपादक का कहना है।

क्रौनिकल 3 विषय आधारित अंक है, जिसके अन्तर्गत हम भावी मार्ग संबधित विभिन्न मार्गो का अनुमान व चिंतन करते है। पाठको तथा सहयोगियो को एक बिंदु से आरम्भ करना जरूरी नहीं। आवश्यकता है, एक मार्ग चुनने की या वास्तव मे एक गंतव्य का आवरण करने की । हम सभी मे दो चिंता विषय सांझा हैं। हम कैथेड्रल परिवार के सदस्यो के बीच विद्यमान, परस्पर स्वतंत्र गति की शक्ति का तीव्र चिंतन करते है। हालाकि उसी तीव्रता से उस मौजूद स्वतंत्रता को हमारी सह यात्रा मे प्रयोग करने हेतु भी, हम विभिन्न मत रखते हैं। हम ये भी समझते हैं कि कैसे परमेश्वर हर व्यक्ति के जीवन को आगे ले जाने हेतु अपना हस्तक्षेप करते हैं। क्रौनिकल 3 एक निर्णायक विकास है, उन पूर्व 2 अकों का क्योकि ये तीनो भाषाओ मे उपलब्ध है। अंग्रेज़ी, हिन्दी व तमिल जिन भाषाओ मे हम इक्टठे प्रार्थना करते है। अनिता मौरिस निष्ठापूर्वक हिन्दी अनुवाद का कार्य कर रही हैं, जैसे उन्होने निरन्तर प्रथम व द्वितीय अंक मे किया । हम तमिल अनुवाद को सम्भालने के लिए डेविड रत्नासिंह का स्वागत कर बहुत प्रसन्न है। यदि हम विश्वासी समुदाय के रूप इन तीनो भाषाओ मे कार्य करते हैं, प्रार्थना करते है, स्वप्न देखते है, यह आवश्यक है कि क्रौनिकल को भी हिस्सा बनायें। जैसे कि क्रौनिकल 2 मे LPCEF योजना के तहत् हम अपनी चारदीवारी से बाहर निकल नगर तक पहुचें, क्रौनिकल 3 हम जागृत करने का प्रयास हैं कि किस प्रकार हम एक दूसरे की सहायता हेतू उपलब्ध है। तभी हम वास्तव मे मानसिक रूप से स्वस्थ हो सकते हैं। इसलिये यदि यह घटित हो रहा है, तो यह " क्रौनिकल" मे है। हम– फादर डैनिस लाल, पी. एल्फ्रेड, अनिता मौरिस, डेविड रत्नासिंह, आर. ब्रिटिका तथा मै– योग्यता को प्रोत्साहित कर प्रसन्न है। किन्तु वस्तुतः हम उस मार्ग के अभिलाषी है जिसके द्धारा हम पाठक व लेखक क्रौनिकल का उपयोग कर सके, परमेश्वर की परिवर्तनकारी शक्ति जो हमारे जीवन व कार्य का केन्द्र है, सांझा कर सकें। आखिरकार हम सभी कैथेड्रल परिवार के सदस्य हैं। इसलिये नही कि हम एक स्मारक के संरक्षक है, अपितु एक आंदोलन के पथप्रदर्शक भी हैं।

क्रिस्टेल आर. देवदासन

अंत मे

निराश मत होओः एक अपराधी क्षमा किया गया।
भ्रम मे मत रहो : एक अपराधी नाश किया गया।